ग्रन्थमाला 'बालसंस्कार' : खण्ड १

सुसंस्कार एवं उत्तम व्यवहार

हिन्दी (Hindi)

संकलनकर्ता

हिन्दू राष्ट्र-स्थापनाकी उद्घोषणा करनेवाले

सच्चिदानंद परब्रह्म डॉ. जयंत बाळाजी आठवले

पू. संदीप गजानन आळशी

सनातन संस्था

जून २०२३ तक सनातनके ३६२ ग्रन्थोंकी हिन्दी, मराठी, अंग्रेजी, गुजराती, कन्नड, तमिल, तेलुगु, मलयालम, बांग्ला, ओडिया, पंजाबी, असमिया, सर्बियन, जर्मन, नेपाली, स्पैनिश, फ्रांसीसी, इन १७ भाषाओंमें ९३ लाख ८७ सहस्र प्रतियां !

ग्रन्थके संकलनकर्ताओंका परिचय

सच्चिदानंद परब्रह्म डॉ. जयंत बाळाजी आठवलेजीके आध्यात्मिक शोधकार्यका संक्षिप्त परिचय

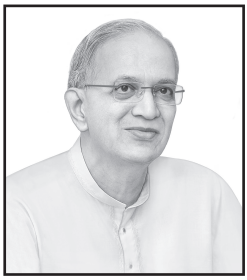

१. अध्यात्मप्रसारार्थ 'सनातन संस्था'की स्थापना

२. शीघ्र ईश्वरप्राप्तिके लिए 'गुरुकृपायोग' साधनामार्गकी निर्मिति : गुरुकृपायोगानुसार साधनासे ८.७.२०२३ तक १२५ साधकोंको सन्तत्व प्राप्त तथा १,०४० साधक सन्तत्वकी दिशामें अग्रसर हैं ।

३. आचारधर्मपालन, देवता, साधना, आदर्श राष्ट्ररचना, धर्मरक्षा आदि विविध विषयोंपर विपुल ग्रन्थ-निर्मिति

४. हिन्दुत्वनिष्ठ नियतकालिक 'सनातन प्रभात'के संस्थापक-सम्पादक

५. धर्माधिष्ठित हिन्दू राष्ट्रकी (ईश्वरीय राज्यकी) स्थापनाकी उद्घोषणा (वर्ष १९९८)

६. 'हिन्दू राष्ट्र'की स्थापना हेतु सन्त, सम्प्रदाय, हिन्दुत्वनिष्ठ आदि का संगठन तथा उनका दिशादर्शन !

(सम्पूर्ण परिचय हेतु पढें – www.Sanatan.org)

सच्चिदानंद परब्रह्म डॉ. आठवलेजीका साधकोंको आश्वासन !

स्थूल देहको है स्थल कालकी मर्यादा ।
कैसे रहूं सदा सभीके साथ ॥
सनातन धर्म मेरा नित्य रूप ।
इस रूपमें सर्वत्र मैं हूं सदा ॥ - जयंत बाळाजी आठवले

१८.५.१९९६

पू. संदीप गजानन आळशी

सनातनकी ग्रन्थ-रचना की सेवा करनेके साथ ही राष्ट्रजागृति एवं धर्मप्रसार करनेवाली प्रसारसामग्रीके (सनातन पंचांग, धर्मशिक्षा फलक इत्यादि के) लिए लेखन करते हैं । साधना, राष्ट्र एवं धर्म सम्बन्धी नियतकालिक 'सनातन प्रभात'में प्रबोधनपरक लेखन भी करते हैं ।

अनुक्रमणिका

१. सुसंस्कार क्यों आवश्यक हैं ? १०

२. रातमें शीघ्र सोकर सवेरे समयसे उठना ! १२

३. भगवानकी पूजा-अर्चना, उपासना आदि करें ! १३

४. माता-पिता और घरके बडोंको झुककर प्रणाम करें ! १५

५. माता-पितासे कैसा व्यवहार करें ? १६

६. अतिथियोंका स्वागत और आवभगत कैसे करें ? २०

७. विद्यालयीन सामग्री कैसी हो ? उसकी देखभाल कैसे करें ? २२

८. विद्यालयको विद्याका मन्दिर समझकर आदर्श पद्धतिसे आचरण करें ! २६

९. लिखावट सुन्दर और सुवाच्य हो ! ३२

१०. पढते समय क्या सावधानियां बरतें ? ३३

११. पढाई अच्छी होनेके लिए क्या करें ? ३४

१२. 'कॉपी', 'रैगिंग' आदि कुप्रथाओंसे दूर रहें ! ३६

१३. निराशा अथवा परीक्षामें असफल होनेपर आत्महत्याका विचार करना मूर्खता है ! ३८

१४. पढाईके अतिरिक्त अन्य क्या पढें ? ३९

१५. शरीरसम्पदा स्वस्थ रखनेके लिए क्या करना चाहिए ? ४६

१६. कौनसे खेल नहीं खेलने चाहिए तथा कौनसे खेल खेलने चाहिए ? ४७

१७. मनोरंजक अभिरुचियोंकी अपेक्षा जीवनमें लाभदायक सिद्ध होनेवाली अभिरुचियां ही अपनाएं ! ५१

१८. बच्चो, सदैव अच्छे साथियोंकी संगतिमें ही रहें ! ५७

१९. बच्चो, आपके आदर्श कैसे हों ? ६०

२०. सुसंस्कृत होनेके लिए दूरदर्शन (टी.वी.) से दूर रहें ! ६६

२१. मनोरंजक गीतोंकी अपेक्षा ईश्वरभक्ति एवं राष्ट्रभक्ति बढानेवाले गीत सुनें और गाएं ! ७३

२२. बच्चो, इन अच्छी बातोंको अपनाओ ! ७७

सनातनकी 'संस्कार' ग्रन्थमालाके ग्रन्थपुष्प !

राष्ट्र एवं धर्म प्रेमी बनो !

- कौनसे स्वदेशी खेल खेलें ?
- स्वदेशी वस्तुओं का उपयोग क्यों करें ?
- स्वभाषाभिमानी बननेके लिए क्या करें ?

भूमिका

आजके बालक भविष्यमें देशके आधारस्तम्भ हैं । देशका आधारस्तम्भ बननेके लिए बालक गुणसम्पन्न एवं आदर्श होने चाहिए । आजके बालकोंकी स्थिति कैसी है ? अनेक बच्चे बडोंका कहना नहीं मानते, मन लगाकर पढाई नहीं करते एवं शिक्षकोंका उपहास उडाते हैं । अनेक बच्चे घण्टों क्रिकेट खेलते हैं अथवा दूरदर्शन, भ्रमणभाष देखते हैं । कुछ बच्चे बडे होकर चलचित्र-कलाकार बननेका ध्येय रख, निरन्तर चलचित्रों के गाने गुनगुनाते रहते हैं । कुछ बच्चे दुष्ट बच्चोंकी संगतिमें पड जाते हैं, तो कुछ गुटका, तम्बाकू आदि व्यसन करते हैं । इन सब कारणोंसे बच्चे स्वार्थी, चिडचिडे, हठी, चंचल एवं विकृत बनते जा रहे हैं । यह सब रोकनेके लिए बच्चोंपर सुसंस्कार करना आवश्यक हो गया है ।

इस ग्रन्थमें कुसंस्कारोंके दुष्परिणाम तथा सुसंस्कारी स्वभावका महत्त्व तथा लाभ बताया गया है । यह पढकर बच्चोंको अच्छे तथा बुरे संस्कारोंका अन्तर समझमें आएगा । उन्हें यह भी समझमें आएगा कि पढाई किस पद्धतिसे करनी चाहिए, कौन-कौनसी रुचिके कार्य करने चाहिए, गुरुजनोंसे कैसा व्यवहार करना चाहिए एवं अतिथियोंका स्वागत कैसे करना चाहिए । बच्चे ये सूत्र सीखकर जीवनमें सफल होनेके साथ सद्गुणी एवं आदर्श भी बनेंगे ।

बच्चोंसे सम्बन्धित बातोंके विषयमें अभिभावकोंका उचित दृष्टिकोण, उनके द्वारा बच्चोंसे करवाए जानेवाले प्रयोग आदि भी इस ग्रन्थमें दिए हैं ।

श्री गुरुचरणोंमें प्रार्थना है कि भावी पीढी सुसंस्कृत, धार्मिक एवं राष्ट्रभक्त बननेके लिए यह ग्रन्थ उपयुक्त सिद्ध हो ! – **संकलनकर्ता**